International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 21-06-2020; Accepted: 07-07-2020; Published: 22-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 57-59

मंगलेश डबराल की कविताओं में यथार्थवादी चिंतन: 'हम जो देखते हैं' कविता संग्रह के विशेष संदर्भ में

रंगस्वामी एन

सहायक प्रोफसर, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी मेमोरियल आर्ट्स आन्ड साइंस कॉलेज, अट्टपाडी, पालक्काड, केरल, भारत

प्रस्तावना

मंगलेश डबराल समकालीन हिन्दी कविता क्षेत्र के विख्यात एवं प्रख्यात कलाकार हैं। समकालीन कविता के विकास में उनका योगदान अद्वितीय है। उनकी कविताएँ समकालीन हिन्दी कविता क्षेत्र में असाधारण, सहज, सरल एवं अप्रतिम क्षमता दिखाने वाली हैं। आपकी कविताएँ वर्तमान समाज में व्याप्त विद्रूपताओं, कुरीतियों, विसंगतियों, असंगतियों एवं त्रुटियों को बेनकाब करने की कोशिश करती हैं। जीवन की सच्चाइयों को बहुत ही बारीकी ढंग से पेश करने का प्रयत्न उन्होंने अपने सृजनात्मक क्षमता के माध्यम से किया है। यथार्थ जीवन प्रसंगों को यथार्थ दृष्टि से देखने की क्षमता उनकी कविताओं की विशेषता है। मंगलेश जी ने अपने भोगे हुए जीवन यथार्थ को अपनी कविताओं का विषय बनाया है।

दरअसल सामाजिक अंतर्विरोधों को उकेरने की क्षमता मंगलेश की कविताओं में निहित है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अमानवीयता, असामंजस्यता, अवमूल्यों, विडंबनाओं, भ्रष्टाचारों के प्रति प्रतिरोध किया है। वे समसामयिक व्यवस्था के खिलाफ़ आक्रोश एवं घृणा व्यक्त करते हैं। वर्तमान समाज के परिवेश जन्य समस्याओं के प्रति जागरूक रहने के लिए वे अपनी कविताओं के द्वारा आह्वान करते हैं। जब कहीं शोषण, अन्याय, अत्याचार, हिंसा एवं अतिक्रमण दिखायी दे रहे हैं तब उन्होंने उसके प्रति बेधडक निडरता के साथ विद्रोह एवं घृणा का पर्दाफाश किया है। इसलिए कह सकते हैं कि विद्रोहात्मकता उनकी कविता की खासियत है।

आज जीवन जीना बहुत ही कठिन काम है। लोग सुविधा के साथ जीने के लिए रफ़तार में है। इसी रफ़तार में वे अपने अस्तित्व, संबंध, रिश्तें आदि को खो बैठे जा रहे हैं। हर दिन, हर पल दिखने वाली घटनाएँ आज की कविता का विषय बन गया है। मंगलेश जी पहाड़ी प्रदेश में जन्म लेने के नाते उनकी कविताओं में आम जनता की कटु जीवन यथार्थ का पर्दाफाश मिलते हैं। उन्होंने निजि जीवनानुभव के धरातल पर काव्य सृजन किया है। उनकी कविताओं में एक ओर ग्रामीण लोगों की सच्ची निष्कलंक तस्वीर है तो दूसरी ओर शहरी जीवन के छल-छद्म, कपट, बेईमान, स्वार्थ मनोभाव, धोखा, विलास जीवन आदि का चित्रण भी है। अपने समय की क्रूरता को सही ढंग से समझने वाले कवि हैं मंगलेश जी। आम या साधारण लोगों की आवाज़ बनते हुए वे दीख पड़ रहे हैं।

भूख अपने समय की सबसे बड़ी समस्या है। वास्तव में मनुष्य के जीवन जीने का उद्देश्य सिर्फ तीन बातें हैं। वस्त्र, अन्न, आवास। इन्हीं तीन प्राथमिक उद्देश्यों के निवारण के लिए ही आदमी जी रहे हैं। अपितु कभी कभी इन तीनों की अपर्याप्तता ने मनुष्यों को हताश एवं निराश बना दिया है। रोटी रोजमर्रा के लिए उनको मेहनत करना पड़ता है। आम या साधारण जनता के इसी विवशता को पूँजीपति लोग शोषण करते हैं। इस यथार्थता को मंगलेश जी अपनी कविता शीर्षक 'नींद की कविता' में पेश करते हैं। भूख की भयावहता पर वे यों लिखते हैं कि-

"भूख से परेशान लोग अक्सर नींद से काम चलाते हैं. कोई अपने घोडे
दौड़ाता हुआ उनके पास से गुज़र जाता है तब भी वे नहीं उठते.
दूसरी
ओर कुछ लोग अनिद्रा की शिकायत करते नज़र आते हैं. नींद की गोलियां उनके पेट में खिल खिलाती है. वे हमेशा दूसरों की नींद तोड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं।"1

जीवन की तमाम संकटों एवं कठिनाइयों को वे सहज सरल रूप से नहीं देखते हैं बल्कि एक गहन संवेदना के साथ उसे देखने का काम करते हैं। यथार्थ जीवन के प्रति जागरूकता उनकी कविता की खासियत है। वे यों जताते हैं कि-

"कुछ दिन मन में विद्रोह होता है घुमड़ न रहती है
कोई दुख देखकर नीची कर लेनी होती है निगाह।"2

मनुष्य किसी एक बात पर हमेशा निराश और हताश होते हैं। लोगों के इस व्यवहार पर कटु आलोचना करते हुए कवि निराशा के स्थान पर आशा की किरणें भर देने का आह्वान करते हैं। जीवन में जब कहीं कुंठा है और निराशा है तब वहाँ उम्मीद की ख्वाहिश भी रहती है। वे स्पष्ट करते हैं कि-

"मैं चाहता हूँ निराश बची रहे।
जो फिर से एक उम्मीद,
पैदा करती है अपने लिए
शब्द बचे रहें

जो चिड़ियों की तरह कभी पकड़ में नहीं आते
प्रेम में बचकानापन बचा रहे
कवियों में बची रहे थोड़ी लज्जा।"3

कवि मंगलेश जी जीवन में उपजी समस्याओं पर आत्मसात् करके उसे नये धरातल पर यथार्थता के साथ देखने का प्रयत्न करते हैं। जीवन की समस्याएँ जब तीव्रतर बन जाती हैं तब वहीं एक भयावहता भी उभरकर सामने आ जाती है। यहाँ मंगलेश जी भूख को यथार्थ जीवन के प्रतीक के रूप में स्वीकार करके यथार्थ जीवन की गहनता की ओर इशारा करते हैं। क्यों कि आज भूख संसार भर की समस्या बन गयी है। वे बयान करते हैं कि-

"तमाम संबंधों को बिदा कर देने के बाद
मैं यहाँ उगा हूँ
जहाँ सारी ऋतुएँ समाप्त हो गयी हैं
धूप और समुद्र समाप्त हो गए हैं
थोड़ी देर के लिए मैं उगा हूँ यहाँ
जहाँ उजाला जाले की तरह चिपटता है
और समस्याएँ मेरी भूख के कारण
डाल देती हैं मेरा ही शरीर।"4

विश्व में जीवन जीना बहुत ही मुश्किल है। कवि संसार को युद्ध स्थान मानते हैं। विश्व में निज जीवन जीने के लिए लड़ना पड़ेगा। अक्सर इस कृत्रिम विश्व में जीने के लिए क्षमता या शक्ति की आवश्यकता है। अपने हथियार के नोक को पैनी बनाए बिना हम जी नहीं सकते। इस यथार्थता को यथार्थ बोध के साथ अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति करने का प्रयास मंगलेश ने किया है। वे जीवन संघर्ष के यथार्थता पर दृष्टिपात करते हैं। मनुष्य कुल के विलाप, विपन्नता पर वे इस प्रकार बताते हैं कि-

"प्यारे बच्चो हमने ही तुम्हें बताया था जीवन एक युद्ध स्थल है जहाँ लड़ते ही रहना होता है. हम ही थे जिन्होंने हथियार पैने किये. हमने ही छोड़ा युद्ध हम ही थे जो क्रोध और घृणा से बौखलाये थे. प्यारे बच्चो हमने तुमसे झूठ कहा था.
यह एक लंबी रात है. एक सुरंग की तरह. यहाँ से हम देख सकते हैं बाहर का एक अस्पष्ट दृश्य. हम देखते हैं मारकाट और विलाप. बच्चो हमने ही तुम्हें वहाँ भेजा था. हमें माफ़ कर दो. हमने झूठ कहा था कि जीवन एक
युद्धस्थल है।"5

वर्तमान समय में मानवीयता का ह्रास हो रहा है। इसे समझते हुए भी कवि आशा करते हैं कि मानवीयता विश्व भर में आ जायें। जब कवि मनुष्यता या मानवीयता, प्रेम, दया, करुणा एवं सहानुभूति की खोज में निकलते हैं लेकिन उन्हें कहीं भी मानवीयता नहीं दिखायी पड़ती है। उनको सिर्फ अराजकता, अन्याय एवं हत्या ही दिखायी पड़ती हैं। वे निराश हो जाते हैं। फिर भी वे आशा करते हैं कि निराशा आशा में बदल जाए। यथा-

"बाहर एक बाँसुरी सुनायी देती है
एक और बाँसुरी है
जो तुम्हारे भीतर बजती है
और सुनायी नहीं देती
एक दिन वह चुप हो जाती है
तब सुनायी देता है उसका विलाप
उसके छेदों से गिरती है राख।"6

आज लोग अपने क्रिया-कलापों में कार्यरत हैं। कभी कभी व्यस्त जैसे अभिनय भी करते हैं। इसके अलावा लोग आत्मकेंद्रित भी बनते जा रहे हैं। अपने चारों ओर घटित होने वाली समस्याओं के प्रति नज़रअंदाज़ करते रहते हैं। लोग संवेदन शून्य बनते जा रहे हैं। सहानुभूति, करुणा, त्याग, एवं प्रेम लोगों के जीवन से छूट रहे हैं। लोग स्वार्थ लिप्सा, विलासिता के साथ जी रहे हैं। इसके विरोध में खड़े होकर कवि अपने यथार्थ-बोध को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि-

"मैंने दरवाज़े बंद किये
और कविता लिखने बैठा
बाहर हवा चल रही थी
हल्की रोशनी थी
बारीश में एक साइकिल खड़ी थी
एक बच्चा घर लौट आ रहा था
मैंने कविता लिखी
जिसमें हवा नहीं थी रोशनी नहीं थी
साइकिल नहीं थी बच्चा नहीं था
दरवाज़े नहीं थे।"7

आपकी 'दिल्ली में एक दिन' शीर्षक कविता में उन्होंने शहरी जीवन की ओर इशारा किया है। वास्तव में दिल्ली ऐसा एक शहर है जिसमें आडंबरता, लालच से जीविका चलाने वाले लोगों से लेकर साधारण जीवन जीने वाले लोग तक अपनी पेट भरने के लिए प्रयासरत हैं। विलासी जीवन बिताने वाले लोग दंभ से गर्व करते रहते हैं। मज़दूर, हाशिएकृत या सर्वहारा वर्ग दिन भर पसीने बहाते रहते हैं। इस पर अभिव्यक्ति इस कविता में मिलती है कि-

"उस छोटे से शहर में एक सुबह
या शाम या किसी छुट्टी के दिन
मैंने देखा पेड़ों की जड़ें
मज़बूती से धरती को पकड़े हुए हैं
हवा थी जिसके चलने में अब भी एक रहस्य बचा था
सुनसान सड़क पर
अचानक कोई प्रकट हो सकता था

आ सकती थी किसी दोस्त की आवाज़
कुछ ही देर बाद
इस छोटे से शहर में आया
शोर कालिख पसीने और लालच का बड़ा शहर।"8

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि मंगलेश जी की कविताएँ अपनी अभिव्यक्ति में यथार्थ जीवन समस्याओं की सही पहचान लाती हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना वे चाहते हैं। समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना करने में मंगलेश की कविताएँ सक्षम है।

संदर्भ सूची

1. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 33
2. घर का रास्ता, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 13
3. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 85
4. पहाड़ पर लालटेन, मंगलेश डबराल, चुपचाप, पृ..सं. 28
5. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 30
6. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 93
7. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 40
8. हम जो देखते हैं, मंगलेश डबराल, पृ.सं. 17